वार्षिक प्रगति आख्या

वर्ष 2012–2013

उत्तरापथ सेवा संस्था
ग्राम : कमतोली, पत्रालय : भण्डारीगॉव
जनपद : पिथौरागढ़, 262552, उत्तराखण्ड
दूरभाषः 09451814288, E-mail: Uttarapath_india@rediffmail.com, Web: uttarapath.org

पृष्ठभूमि

देश में प्राकृतिक सौन्दर्य, संसाधनों से परिपूर्ण उत्तराखण्ड को जहॉ एक तरफ देवताओं की निवास स्थली के रूप में मान्यता प्राप्त है, वहीं दूसरी तरफ यहॉ के गरीब एवं पिछड़े वर्ग के समुदाय को अपनी दो जून की रोटी–पानी की व्यवस्था हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में महिलाओं की स्थिति निहायत दयनीय है, भोर से ही घर के काम–काज, दूर दराज जंगल से लकड़ी एवं घास लाने, पानी लाने, खेती–बाड़ी के साथ–साथ अन्य घरेलू काम–काजों में भी मदद करना इनके दैनिक दिनचर्या का अंग बन चुके है। इसके बावजूद भी यहॉ की महिलाओं के श्रम की न तो कोई कीमत है, और न ही कोई पहचान एवं सम्मान मिल पाता है। हमेशा से महिलाओं को हाशिये पर ही रखा जाता रहा है।

विषम भौगोलिक संरचना के ताने–बाने से जूझती, पहाड़ो के सदृश उतार–चढ़ाव भरे जीवन में भी अपने लक्ष्य से अविचलित एवम् अडिग ऐसे मातृशक्ति के जीवन में सामुदायिक भागीदारी के तहत आर्थिक परिवर्तन की सोच रखने वाले समाजसेवी व्यक्तियों के समूह द्वारा ***उत्तरापथ सेवा संस्था*** की स्थापना सन् 2002 में की गयी, जिसका पंजीकरण ***सोसाइटी रजिस्ट्रे न एक्ट , 1860*** के अन्तर्गत 5 अप्रैल, 2002 को कराया गया।

हमारा मि न

''गरीब एवं वंचित वर्ग की महिलाओं का आजीविका के वैकल्पिक तरीकों के माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक स क्तीकरण करना, ताकि उनके जीवन भौली के तरीकों में सुधार एवं गुणात्मक बदलाव आ सके।''

हमारी रणनीति

- ☞ महिलाओं को लामबंद एवं संगठित कर स्वयं सहायता समूहों, महासंघों का गठन करना।
- ☞ समूहों के स्वतः संचालन एवं स्व प्रबन्धन हेतु क्षमता विकास करना।
- ☞ मुख्य धारा के साथ समूहों का समन्वयन।
- ☞ आजीविका के विचारों से समूहों को परिचित कराना, आजीविका से संबन्धित मुद्दों के पहचान एवं समाधान हेतु समूहों का क्षमता विकास करना। आजीविका संवर्द्धन।
- ☞ पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाना और उसका संवर्द्धन करना।
- ☞ शिक्षा को बढ़ावा देना। पंचायतीराज के तहत सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहन देना।
- ☞ जेण्डर–विभेद एवं महिलाओं के खिलाफ हो रहे उत्पीड़न एवं हिंसा के विरूद्ध आन्दोलनों व सकारात्मक सामूहिक पहल को प्रोत्साहित करना।

कार्यक्षेत्र

उत्तरापथ सेवा संस्था सम्पूर्ण भारतवर्ष में कार्य कर सकने के लिए वैधानिक रूप में पंजीकृत है, किन्तु संस्था वर्तमान में उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ के चार विकासखण्डों कनालीछीना, डीडीहाट, बेरीनाग और मुनस्यारी के अधिकांश गॉवों में कार्य कर रही है।

उत्तरापथ द्वारा वर्ष 2012–2013 में संचालित गतिविधियॉ

आजीविका संवर्द्धन

वर्ष 2012–2013 के लिए **जम ोदी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई** से प्राप्त सहयोग से मसाला व सब्जी की खेती की शुंरूआत कराना तथा उसे व्यावसायिक खेती के रूप में अपनाने के लिए तैयार कराना।

लक्ष्य–आजीविका के रूप में मसालों की खेती की शुरूआत कराना, जो पूर्णरूपेण महिला स्वयम् सहायता समूहों द्वारा स्व–प्रबन्धकीय हो।

कार्य क्षेत्र– विकास खण्ड– कनालीछीना, डीडीहाट, बेरीनाग, मुनस्यारी।
जनपद– पिथौरागढ़, प्रदेश– उत्तराखण्ड।

महिला स्वयम् सहायता समूहों, किसान क्लबों का गठन तथा क्षमतावृद्धि

परियोजना क्षेत्र के उपयुक्त गॉव/तोक का चयन कर 2 क्लस्टर (सिलिंगढ़घाटी, सुगम–मुवानी) के अन्तर्गत 57 स्वयम् सहायता समूहों तथा 59 किसान क्लबों का गठन किया गया। जिसके माध्यम से लगभग 1600 परिवारों तक सीधे पहुॅच हो सकी। स्वयम् सहायता समूहों को अल्पबचत हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

सामुदायिक सहभागिता के तहत सभी समूह सदस्य अपनी मासिक बचत, बैठक करना, कार्यवाही पंजिका लिखना तथा आवश्यक प्रपत्रों का रखरखाव कर रहे हैं। समूह की अब तक की कुल बचत राशि रू0 4.33 लाख लगभग हो चुकी है, कुछ समूहों में आंतरिक ऋण की सुविधा प्रदान की जा रही है।

प्रशिक्षण श्रॅृखला के तहत किसानों की दो प्रकार से क्षमतावृद्धि की गयी।

प्रथम संस्थागत ढॉचागत क्षमतावृद्धि–

स्वयम् सहायता समूह की आवश्यकता, महत्व, उपयोगिता विषय पर फील्ड लेबल प्रशिक्षण, शैक्षणिक भ्रमण तथा आवासीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया जिनमें समूह की अवधारणा, अनुशासन, प्रपत्रों का रख–रखाव व लेखा–जोखा, नेतृत्व क्षमता विकास, सरकारी योजनाओं तक सीधी पहुॅच आदि प्रमुख रूप से रहे।

द्वितीय परियोजना अभिमुखीकरण क्षमतावृद्धि (मसालों की खेती)

मसालों की खेती को प्रोत्साहित करते हुए महिला किसानों को व्यावसायिक खेती के तरीको, तकनीकी जानकारी, रोगों से रोकथाम, उन्नत बीजों की जानकारी एवं उनका प्रयोग, अनुभवों से सीख, बाजार की जानकारी व प्रबन्धन आदि विषयों पर क्षमतावृद्धि हेतु कृषि विशेषज्ञों, कृषिगत संस्थानों, फील्ड डेमोस्ट्रेशन, एक्सपोजर, गोष्ठी एवम् किसान मेलों में प्रतिभाग तथा कृषि विशेषज्ञों द्वारा फील्ड व आवासीय प्रशिक्षणों आदि माध्यमों का प्रयोग किया गया।

आजीविका संवर्द्धन की भ्रुरूआत

व्यावसायिक मसालों की खेती हेतु हल्दी, लहसुन, अदरक, मेंथी आदि की खेती को

प्रोत्साहित किया गया, तथा सब्जी की खेती को बढवा देने हेतु प्याज, गोभी, मटर, शिमला मिर्च प्रोत्साहित किया गया। किसानों द्वारा व्यावसायिक खेती को अपनाकर स्थानीय बाजार में मसालों व सब्जियों को बेचा गया।

बाजार सर्वेक्षण– स्थानीय सब्जी व मसालों की उपलब्धता, मॉग, खपत तथा मूल्य को आधार

मानकर समय–समय पर सर्वेक्षण किया गया। समय–समय पर कृषि विशेषज्ञों, सहायकों का सीधे फील्ड विजिट करा कर सब्जी व मसालों की खेती तथा उद्यान सम्बन्धी रोग उपचार आदि की जानकारी, मृदा परीक्षण आदि से किसानों को लाभान्वित किया गया। आजीविका संवर्द्धन को और अधिक मजबूत करते हुए सब्जी व मसालों की खेती के अतिरिक्त, सीरियल्स तथा उद्यान की खेती की शुरूवात कियी गयी। प्राप्त परिणामों के आधार पर हल्दी की खेती की ओर किसानों की रूचि को देखते हुए इसका

व्यापक प्रसार किया गया।

कम लागत से पारम्परिक तरीकों से भण्डारण करने व जैविक कीट नाशक दवा का प्रयोग करने की विधि का प्रयोग। बॉस का उपयोग वर्तमान में भण्डारण के बर्तन जैसे डोका, पुतके आदि वस्तुओ को बनाने के लिए किया जाता है।

किसान क्लब प्रोत्साहन कार्यक्रम

किसानों में किसान क्लबों की उपयोगिता की स्पष्ट समझ तथा उनके सम्पूर्ण विकास हेतु नाबार्ड की लाभकारी योजनायें व सोच।

- ☞ सरकारी विभागों से सीधे सम्बन्ध व लाभकारी योजनाओं की प्राप्ति हेतु पहल।
- ☞ कृषिगत समस्याओं व जानकारियों (सब्जी, मसाले की खेती, फसल व बागवानी) के सबंध में विशेषज्ञों से सीधी वार्ता। किसान क्लब की ऋण आवश्यकता की पूर्ति हेतु बैंकों की सकारात्मक भूमिका
- ☞ पशुंधन व डेयरी विकास हेतु अच्छी नस्ल के पशुओं को पालना और नस्ल सुधार तथा टीकाकरण को प्रोत्साहन देना। पशुपालकों को पशुपालन सम्बन्धी तकनीकी जानकारी जैसे–नस्ल सुधार हेतु कृत्रिम गर्भाधान की उपलब्ध सुविधा तथा डेयरी विकास को बढ़ावा देकर आमदनी में वृद्धि पशुओं की देखरेख तथा उनके स्वास्थ्य के प्रति संवेदनशील होना। बीमार पशुओं का उपचार। टीकाकरण व दवाई वितरण।
- ☞ उद्यान विभाग प्रदत्त सुविधाओं व लाभों की जानकारी, पौधों की छटनी या चौपिंग का प्रदर्शन, सब्जी बीज (लौकी, कद्दू, टमाटर) वितरण, हल्दी व अदरक के बीजों का प्रचार–प्रसार, फलोत्पादन हेतु जानकारी और पौध वितरण।

रेखीय विभागों तथा अन्य संस्थाओं से कनवरजे□ ा

गॉव की छोटी–बढ़ी योजनाओं को प्रभावी तरीके से संचालित हो सकें, इन्हीं उद्देश्यों की पूति हेतु रेखीय विभागों से सम्पर्क बढ़ाना तथा योजनाओं को क्रियान्वित करना।

- ☞ घटते जलस्रोतों पर ध्यान संकेन्द्रित कराना और उसके निदान के प्रयास कराना। जिसके तहत जिला कृषि विभाग से वाटर हारवेस्टिंग टैंको का निर्माण कर मत्स्य पालन तथा पॉलीहाउस व वर्मीकम्पोस्टिंग का निर्माण कर लाभप्रद खेती को बढ़ावा दिया गया।
- ☞ रेशम विभाग की क्लस्टर योजना के तहत कीट पालक किसानों का चयन कर रेशम उत्पादन (सहतूत) कार्यक्रम से जोड़ा गया।

- ☞ फसलों पर पर्यावरण का कुप्रभाव तथा फसलों को बीमारियों से रोकथाम के उपाय हेतु कृषि विशेषज्ञों से सुझाव। उन्नत किस्म के बीजों का प्रयोग।
- ☞ मनरेगा कार्यक्रम को प्रभावी तरीके से कराना।

महिला स□ क्तिकरण व बाल विकास फेडेरे□ न तथा कि□ ोरी संगठन मजबूतीकरण

महिला सशक्तिकरण, जल, जंगल, जमीन एवं पर्यावरण आदि मुद्दों पर महिलाओं को संगठित कर फेडेरेशन का गठन किया है, इस प्रक्रिया के दौरान उन्हें उनके हक–हकूक के विषय में गोष्ठियों, प्रशिक्षणों,

एक्सपोजर के माध्यम से जागरूक किया गया, ताकि सामूहिक भागीदारी से गॉव की दिशा व दशा तय हो सकेगी, साथ ही मातृशक्ति को पहचान मिल सकेगी। जल, जंगल, जमीन और पंचायतीराज, हक–हकूक व सामाजिक कुरीतियों आदि विषयों पर चर्चा, गीत, भाषण, नाटक आदि का प्रदर्शन किया गया। जीवन कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम के माध्यम से किशोरियों की क्षमतावृद्धि कर गुणात्मक बदलाव लाया गया।

अनुश्रवण एवम् मूल्यॉकन

परियोजना के सफल क्रियान्वयन हेतु नियमित अनुश्रवण किया जाता रहा। किसानों की समस्याओं की पहचान व उनका समाधान ढूॅढना, कृषि विशेषज्ञों की सलाह व उनका पालन, किये गये कार्यों का मूल्यॉकन व सुझाव आदि माध्यमों से किसनों को आजीविका संवर्द्धन के लिए प्रेरित किया जाता रहा।

Major Activities

Mobilization & Formation of CBOs

Villages/Tok	124	N Panchayat	17	Block	4	District	1
W SHGs	57	Members	533	Saving	4.33 Lakh	Bank A/c	54
Farmer Clubs	59	Members	1052	JLG	18	Finance	30.75 Lakh

Structured Capacity Building of Institutions & Farmers

Conceptual	70	Mebs Shgs,Fcs	2145	Technical	35	Mebs Shgs,Fcs	1115

Farm Demonstration- Initiation of Livelihood Activities

Spices-Hectare	25	Vegetable - Hectare	15	Cereals- Hectare	40	Farmers Shgs,Fcs	1490

Linkages with Market, Mainstreams & other Institutions- Convergence-

NABARD- Vaccinations to Animals – 4123, Treatment of Animals – 2463, Badhiyakaran- 24, Tech know how, Spry , Plants- 1045 by Horti deptt

Distt Agriculture deptt - KCC 27 farmers Rs 3.50 Lakhs, 9 Vermin Compost pits – Rs 27000/-, Jal Sambharan Yajana (Rain harvesting) 5 farmers 23 Lakhs

Sericulture deptt- for Tusser- Houses are being under construction by 6 farmers each cost Rs 67000/- total Rs 4.02 Lakhs

Others- Livestock board, UK- 1 Pairavate trained, MNREGA & Other prgm.

संस्था की आगे की सोच

''उत्तरापथ सेवा संस्था अपने मि□ ान के तहत आजीविका संवर्द्धन के कार्यक्रमों मुख्यतः कृषिगत, प्राथमिक ि□ क्षा, पर्यावरण संवर्द्धन, आपदा प्रबन्धन आदि परियोजनाओं केंकियान्वयन हेतु अपना ध्यान संकेन्द्रित करेगी।''

वर्ष 2012–2013 में संचालित कार्यक्रमों हेतु वित्तीय सहयोग

- ☞ आजीविका संवर्द्धन कार्यक्रम के लिए **जम□ ोदजी टाटा ट्रस्ट, मुम्बई**।
- ☞ किसान क्लब प्रोत्साहन हेतु **नाबार्ड, उत्तराखण्ड।**
- ☞ संगठन मजबूतीकरण के कार्यक्रमों के लिए **उत्तराखण्ड सेवानिधि पर्यावरण ि□ क्षा संस्थान, अल्मोड़ा**।

– 0 –

अध्यक्ष / सचिव
उत्तरापथ सेवा संस्था